डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 दिसम्बर 2010 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

{गुरु महिमा}

वर्ष - आठवां | अंक-आठवां | दिसम्बर-2010 | मासिक पत्रिका

4 आवश्यक सूचना

5 शान्ति
(कबीर साहब की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी.एस. आश्रम (राजस्थान)

15 प्रेम-विरह
(अंतिम कड़ी)
परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से अनमोल वचन
16 पी.एस. आश्रम (राजस्थान)

29 मौत
परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से अनमोल वचन
16 पी.एस. आश्रम (राजस्थान)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाया। **प्रकाशित करने का स्थान :** 1027 अग्रसेन नगर श्री गंगानगर - 335 001 (राजस्थान)
फोन - 0 99 50 55 66 71 (राजस्थान) व 0 98 71 50 19 99 (दिल्ली)
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया **उप सम्पादिका :** नंदिनी

सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 105 | Website : www.ajaibbani.org

आवश्यक सूचना

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की अपार दया से जुलाई - 2001 से मासिक पत्रिका 'अजायब बानी' प्रकाशित हो रही है जिससे संगत लाभ उठा रही है। बहुत से प्रेमियों को यह मासिक पत्रिका डाक से भेजी जाती है। कई बार पता बदलने की वजह से कई प्रेमियों की डाक वापिस आ जाती है या उन तक नहीं पहुँचती जिसके बारे में हमें पता नहीं चल पाता।

जो प्रेमी डाक द्वारा यह पत्रिका प्राप्त कर रहे हैं उनसे निवेदन है कि वे साल में एक बार अवश्य सूचित करें कि उन्हें यह पत्रिका हर माह मिल रही है ताकि उनकी डाक जारी रखी जा सके। आपका क्रमांक पत्रिका के लिफाफे पर लिखा होता है कृपया सूचित करते समय अपना क्रमांक अवश्य लिखें।

Mr. Rajeev Kocher, (242)
220, Bhera Enclave,
Paschim Vihar.

NEW DELHI 110 087

पत्रिका जारी रखने के लिए आप नीचे लिखे पते पर पत्र द्वारा या ई-मेल या टेलिफोन पर सूचित कर सकते हैं। सूचित करने की अंतिम तिथि 15 दिसम्बर 2010 है। आशा करते हैं कि आप समय पर सूचित करेंगे ताकि आपकी डाक जारी रखी जा सके।

आपसे सहयोग की आशा करते हुए।

अजायब बानी

1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर - 335 001 (राजस्थान)

E-mail: dhanajaibs@yahoo.co.in

Phone: 0 99 50 55 66 71 & 0 98 71 50 19 99

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

शान्ति

कबीर साहब की बानी

नाम की दौलत बहुत अमूल्य है दुनियां की दौलत इसका मूल्य नहीं दे सकती। यह दौलत हमारे सतगुरु ने हमें तोहफे के रूप में दी होती है। हमें इसकी कीमत और सतगुरु की कुर्बानी तभी समझ आती है जब हम अंदर जाते हैं जहाँ हमारा सतगुरु सदा रहता है। जो महात्मा अंदर गए वे सदा ही अपने गुरु पर बलिहार गए। गुरु अंगददेव जी महाराज कहते हैं:

बलिहारी गुरु आपणे देयोहाड़ी सदवार।

आप कहते हैं, ''मैं अपने गुरु, गुरु नानकदेव जी पर दिन में एक-दो बार नहीं बल्कि सौ-सौ बार कुर्बान जाता हूँ क्योंकि उन्होंने मुझे नाम की अमूल्य दौलत दी है।'' चाहे हम दुनियां की कितनी भी दौलत इकट्ठी कर लें यहीं छोड़ जाएंगे यह दौलत साथ नहीं जाएगी साथ जाने वाली दौलत 'नाम' है। नाम हमें सतगुरु ने दिया है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

जीव काज निर्धन छोड़कर यमदूत फिर होत गही।

मैं अपने परम पिता कृपाल का धन्यवादी हूँ। आप हमारे लिए इंसानी चोले में आए, इंसानी चोला बिमारियों और परेशानियों का खोल है। हमारी आत्मा जब से परमात्मा से बिछुड़ी है **शान्ति** की खोज के लिए मारी-मारी फिर रही है। इसी शान्ति की खोज के लिए ऋषि-मुनि घर-बार छोड़कर जंगलो-पहाड़ो में गए लेकिन उन्हें **शान्ति** नहीं मिली। मन के बहकावे में आकर उन्होंने अपना तप-योग भी नष्ट कर लिया। लोगों ने उनका मजाक उड़ाया। पुराण पढ़ने से हमें पता लगता है कि किस तरह मन ने ऋषियों-मुनियों को भी बंदर की तरह नचाया।

हम दुनियां में जो भी उपाय करते हैं वह **शान्ति** के लिए ही करते हैं। बचपन में जवानों को देखकर सोचते हैं! जवान होकर शान्त हो जाएंगे? जवानी आते ही पाँचों डाकू घेर लेते हैं फिर सोचते हैं! शायद बुढ़ापें में शान्ति होगी? बुढ़ापे में तृष्णा और बिमारियाँ घेर लेती हैं लेकिन शान्ति नहीं मिलती।

हम **शान्ति** की खोज में शादी करवाते हैं मियाँ-बीवी का जोड़ा बन जाता है लेकिन मन मियाँ-बीवी के बीच बहुत सारी समस्याएं खड़ी कर देता है। जहाँ हम शान्ति ढूढ़ रहे थे वहाँ भी अशान्ति हाथ लगती है।

हम **शान्ति** की खोज में हुकूमत की तरफ जाते हैं। सोचते हैं! राजा-महाराजा और लीडर लोगों को बहुत लोग सलामें करते हैं ये शान्त होंगे? आप जानते ही हैं हुकूमत मिलने पर उसके छिनने का डर लगा रहता है। दूसरी पार्टी का जोर पड़ जाने पर जो लोग हमसे प्यार और इज्जत करते थे वही लोग बदनामी करने लग जाते हैं, हुकूमत भी काँटो की सेज बन जाती है।

हम **शान्ति** की खोज में नित-नियम से तीर्थ यात्राएं करते हैं। एक मजहब दूसरे मजहब से नफरत करता है। मन अशान्त हो जाता है वहाँ भी शान्ति हाथ नहीं लगती। दिल में ख्याल आता है कि शायद धन-दौलत से शान्ति मिलेगी? जब धन-दौलत ज्यादा हो जाता है तो उसे संभालना मुश्किल हो जाता है; टैक्सों और चोरों का डर लगा रहता है।

महात्माओं के कहने का भाव कि दुनियां के किसी भी पदार्थ में सुख-शान्ति नहीं है। महात्माओं ने अंदर जाकर खोज की **शान्ति** प्राप्त की। उन्होंने हमें तरीका समझाया अगर आप शान्ति प्राप्त करना चाहते हैं तो किसी ऐसे महात्मा के पास जाएं जिसने शान्ति प्राप्त की हो।

आज महान सतगुरु महाराज सावन सिंह जी का जन्मदिन है। हम जिनकी याद में बैठे हैं उन्होंने हमारे ऊपर बहुत ही महान उपकार किया है। मुझे आपके चरणों में बैठने का काफी मौका मिला है। आप

बाईस साल **शान्ति** की खोज के लिए बहुत से समाजों में गए। आप अपने सतसंगों में सुनाया करते थे कि आप बहुत सारे भेषी साधुओं से मिले जो अंदर ही नहीं गए थे। जब आप अंदर जाने वाले महात्मा बाबा जयमल सिंह जी से मिले तो उन्होंने समझाया बेटा! शान्ति इस तरह प्राप्त करनी है।

उस महान सतगुरु ने खुद **शान्ति** प्राप्त की, आप बहुत शान्त थे। हमें भी उपदेश दिया अगर आप शान्ति प्राप्त करना चाहते हैं तो अंदर जाने का रास्ता प्राप्त करके 'शब्द-नाम' के साथ जुड़ें। जहाँ से आपकी आत्मा शुरू से आई थी वहीं शान्ति है। आत्मा सच्चखंड से आई थी वहाँ पहुँचकर ही आप **शान्ति** प्राप्त कर सकते हैं।

मैं बताया करता हूँ कि गुरु की कुर्बानी का अहसास और गुरु ने हमारे लिए जो कुछ भी किया होता है उसका अहसास हम अंदर जाकर ही कर सकते हैं। आपके अंदर अपने गुरु के लिए जो दर्द था वह ब्यान से बाहर है। आखिरी समय में जब आपने संसार से जाना था तो आपका दिल गुरु के दर्द से भरा हुआ था। आप कई बार अपने सतसंगों में दिल भरकर कहते थे, ''अगर आज मेरा गुरुदेव शारीरिक रूप में आकर मुझे मिले तो मैं अपना सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार हूँ।''

ऐसे बहुत से प्रेमी सतसंग में बैठे हैं जिन्हें परम पिता परमात्मा कृपाल के चरणों में बैठने का मौका मिला है। वे प्रेमी भी जानते हैं कि आपके दिल में अपने गुरु के प्रति कितना दर्द था आप किस तरह भावुक हो जाते थे। परम पिता कृपाल ने कभी भी यह नहीं कहा, ''मैं कोई ताकत हूँ, आप यही कहते रहे हम तो नालियाँ हैं जो पानी महाराज सावन दे रहे हैं हम उसी पानी को आगे पहुँचा रहे हैं।''

कबीर साहब कहते हैं, ''उस महान गुरु के साथ प्यार लगाना बहुत मुश्किल है अगर परमात्मा गाय, भैंस के चोले में आता तो हम उसकी बोली नहीं समझ सकते थे अगर वह देवी-देवता बनकर आता तो हम उससे फायदा नहीं उठा सकते थे। परमात्मा इंसानों में इंसान

बनकर हमें हमारे घर की याद दिलाने के लिए आया क्योंकि प्यार अंशा-अंशी होता है। इंसानी जामें में आकर इसे बहुत सारी इंसानी क्रियाएं करनी पड़ती है। जब हम उसे अपनी तरह ही खाता-पीता और पहनता देखते हैं तो हमारा भरोसा कायम नहीं रहता।''

अगर हम कमाई करके अंदर जाएं तो हमें पता लगेगा कि हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और हैं। गुरु ने यह चोला अपने सेवकों की आत्माओं को जगाने के लिए धारण किया होता है। वह तो सदा ही 'शब्द-रूप' में रहते हैं अगर हम अंदर जाते होते और उन महात्माओं को समझते होते तो उनके साथ बदसलूकी नहीं करते।

गुरु नानक देव जी को पागल कुराहिया कहा गया। गुरु अर्जुनदेव जी और गुरु तेग बहादुर को बहुत तकलीफें दी गई। गुरु गोविंद सिंह जी के बच्चों को दीवारों में चिनवा दिया गया, उनका घर-बार लूट लिया गया। आप तीन महीनें तक कपड़े नहीं बदल सके। उस समय की हुकूमत ने आपको आराम से नहीं बैठने दिया। क्राईस्ट को सूली पर चढ़ा दिया गया। इन महात्माओं ने कोई अपराध नहीं किया था। हमनें इनसे फायदा उठाने की बजाय अपना नुकसान किया, पापों की गठरी बाँध ली; यह सब धर्म की आड़ में ही किया गया।

महाराज सावन सिंह जी को समाजिक लोगों का बहुत सामना करना पड़ा। कई समाज के लोगों ने आपके आश्रम के सामने अपने धर्मस्थान बनाकर आपकी निन्दा करनी शुरू कर दी। महात्मा किसी से बदला नहीं लेते। बुरे लफ्ज़ सुनकर भी बुरा नहीं बोलते फिर भी हमारे साथ प्यार करते हैं। आप उन विरोधियों से कहते, ''यह गुरु का लंगर है आप यहाँ खाना खा लिया करें।''

हम जानते हैं कि हम सतसंगियों को इतना बर्दाश्त नहीं होता क्योंकि हम अंदर नहीं जाते लेकिन परमात्मा ने सन्तों में बहुत शान्ति और प्यार रखा होता है। सतसंगी इस बात का दुःख मनाते थे कि ये विरोधी लोग हमारी निन्दा करते हैं और आप इन्हें लंगर में से खाना

खाने के लिए कहते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहते, ''प्यारेयो! ये लोगों को हमारे बारे में बताकर हमारा ही काम करते हैं। आपको कोई ईश्तहारबाजी नहीं करनी पड़ती।'' मैं ये बातें आपको किसी किताब में से पढ़कर या किसी से सुनकर नहीं बता रहा हूँ ये सब मेरे आँखों देखे वाक्य हैं।

आप मंसूर की मिसाल दिया करते थे। जब मंसूर को कत्ल करने लगे तो मंसूर ने परमात्मा से कहा, ''हे परमात्मा! तू इन्हें माफ कर दे ये नहीं जानते कि ये कितना बुरा कर्म कर रहे हैं? ये मुझे पहचान नहीं रहे कि मेरे दिल में इन आत्माओं के लिए कितना प्यार और दर्द है।''

जब परम पिता कृपाल पहले टूर पर राजस्थान आए, वहाँ के समाजिक लोगों ने ऐसा ही किया। कई जगह सतसंग ही नहीं होने दिए कि ये ठीक प्रचार नहीं करते। आज आपकी दया से इस जगह पर पत्ते-पत्ते में परमात्मा कृपाल का नाम बोला जा रहा है।

आपके आगे कबीर साहब का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है। कबीर साहब कहते हैं, '' गुरु के साथ प्यार मौहब्बत करना गुरु को समझना बहुत ही कठिन है लेकिन गुरु से लगन लगाए बिना, प्यार किए बिना हमारा कुछ नहीं बनता।''

गुरु से लगन कठिन है भाई, गुरु से लगन कठिन है भाई।
लगन लगे बिन काज न सरिहै, जीव प्रलय होई जाई।।

कबीर साहब कहते हैं, ''जब तक हम उन महान आत्माओं, गुरुओं के साथ प्यार नहीं करते तब तक परमात्मा अंदर दरवाजा नहीं खोलता अगर अंदर जरा भी शक है तो पर्दा नहीं खुलता।''

बुल्लेशाह ने अपने गुरु ईनायत शाह से विनती की कि हमारी बिरादरी में शादी है आप उसमें शरीक हों। ईनायत शाह ने अपनी मजबूरी जाहिर करते हुए कहा कि बेटा! मैं नहीं आ सकता। बुल्लेशाह ने कहा कि आप अपना कोई सेवक ही भेज दें तो हम समझेंगे कि आप

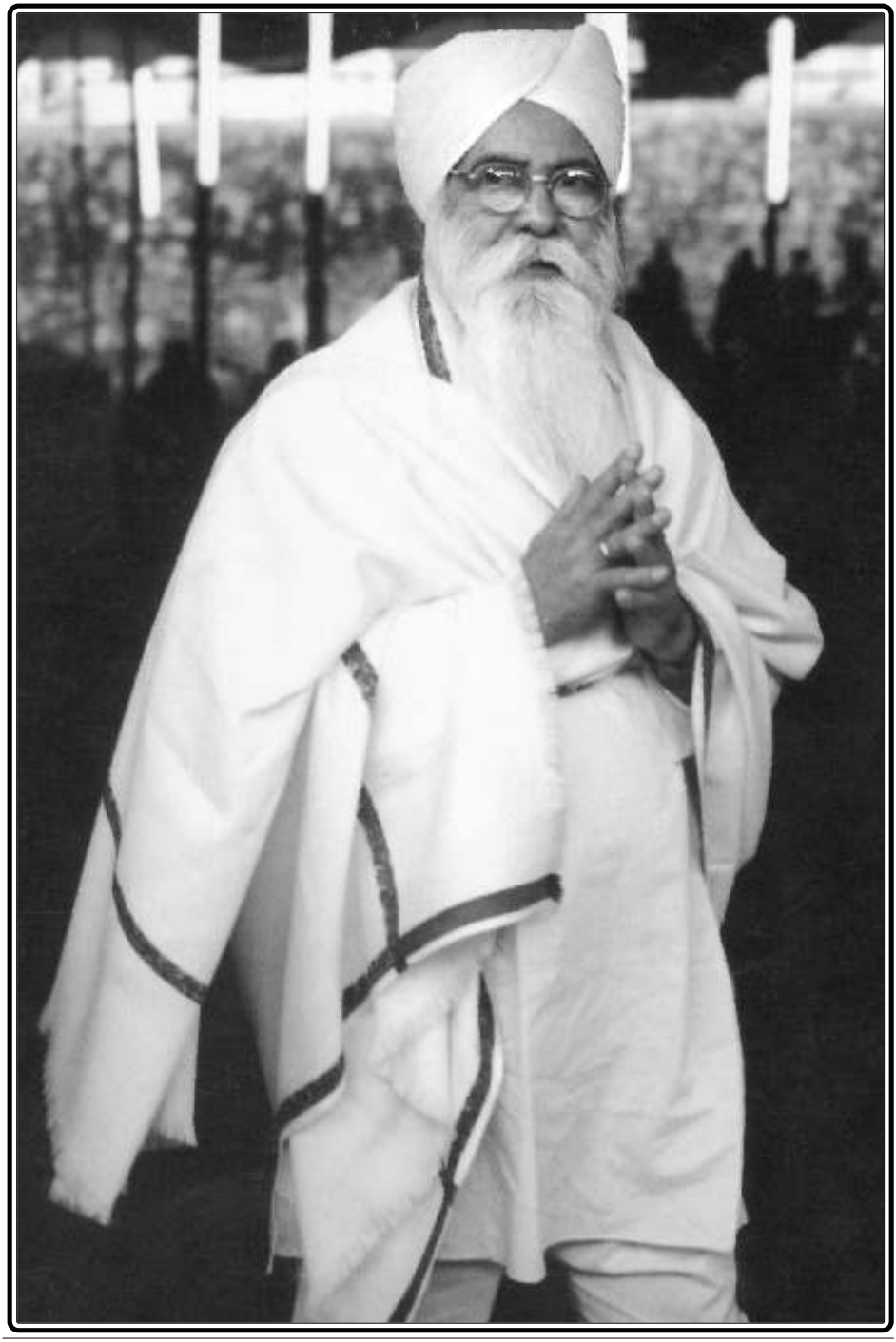

ही आ गए हैं। उन्होंने अपना एक सेवक भेज दिया अगर वे लोग उस सेवक को ईनायत शाह का रूप समझते तो उसका आदर-सम्मान करते। उन्होंने उसे एक मामूली इंसान समझा। जब उस सेवक ने शादी से वापिस आकर ईनायत शाह को सारा हाल सुनाया तो ईनायत शाह नाराज हुए कि बुल्लेशाह के हाथ का पानी भी नहीं पीना।

बुल्लेशाह अंदर जाता था ईनायत शाह को समझता था उस पर 'नाम' का रंग चढ़ा हुआ था वह रंग उतर गया उसे बहुत कष्ट हुआ। बुल्लेशाह ने बहुत उपाय किए कि मैं किस तरह ईनायत शाह को अपना दर्द बताऊँ? आखिर बुल्लेशाह एक औरत के भेष में गाने-बजाने वालों के साथ मिलकर महफिल में जाकर अपनी सद बोलने लगा तो ईनायत शाह ने उसे पहचान लिया कि यह बोल तो मेरे सेवक का है। ईनायत शाह हँसकर कहने लगे, ''तू बुल्ला है?'' बुल्लेशाह ने कहा, ''हाँ जी! हूँ तो बुल्ला पर भूला हुआ हूँ।'' गुरु रामदास जी महाराज अपने गुरु के प्रति कहते हैं:

मात पिता सुत स्त्री सबहूँ ते प्यारा।

तू मुझे माता, पिता, स्त्री, पुत्र सबसे प्यारा है। महाराज सावन सिंह जी सदा ही कहते रहे अगर आपसे और कुछ नहीं होता तो आप गुरु के साथ प्यार ही कर लें। गुरु का प्यार हमें दुनियां का प्यार छोड़ने में मदद करता है। गुरु के साथ प्यार करेंगे तो वहीं जाएंगे जहाँ गुरु जाएगा। गुरु सच्चखंड से आया है उसने सच्चखंड ही जाना है। आप भी उसके प्यार में बंधे हुए वहीं चले जाएंगे जहाँ गुरु जाएगा अगर हम कोई वस्तु लहर के सुपुर्द कर दें तो वह समुंद्र की तह में ही बैठ जाती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

ज्यों जल तरंग उठे बहु भाँति, मिल सलिले सलिल समायन्दा।

जैसे पपीहा प्यासा बूंद का, पिया पिया रट लाई।।

कबीर साहब गुरु प्यार की बहुत अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं, ''जैसे पपीहा स्वाति बूँद का प्यासा होता है जब तक उसे वह बूँद न

मिले तब तक वह पानी-पानी पुकारता रहता है।'' इसी तरह प्रेमी सतसंगी अपने गुरु का दर्शन करके ही खुश होते हैं। वे अंदर उस गुरु स्वरूप को प्रकट कर लेते हैं जो चौबिस घंटे उनके साथ रहता है।

प्यासे प्रान तलफ दिन राती, और नीर ना भाई।।

आप कहते हैं, '' जैसे पपीहा दिन-रात स्वाति बूँद के लिए तरसता रहता है वह नीर नहीं पीता कि मेरी कुल को लाज लग जाएगी।'' ऐसी तड़फ का जिक्र गुरु अर्जुनदेव जी ने भी किया है। जब आपको आपके गुरु रामदास जी ने आपके ताये के घर शादी में भेज दिया और कहा, ''जब तक बुलाया न जाए तुम वापिस मत आना।'' जो रोज दर्शन करता हो उसके लिए दर्शनों के बिना रहना बहुत मुश्किल होता है। आपने अपने गुरुदेव को पत्र में अपना दर्द इस तरह लिखकर भेजाः

मेरा मन लोचे गुरु दर्शन ताईं, विलप करे चात्रिक की न्याईं,
त्रिखा न उतरे शान्त न आवे, बिन देखे गुरु दरबारे जिओ।

जैसे मिरगा सब्द सनेही, सब्द सुनन को जाई।
सब्द सुने और प्रान दान दे, तनिको नाहिं डेराई।।

कबीर साहब प्यार से कहते हैं, ''मृग को कंडा-हेरी शब्द से प्यार होता है वह उस आवाज को सुनकर सब कुछ भूल जाता है और शिकारियों के घुटनों पर अपना सिर रख देता है। वह शब्द का आशिक है, उस शब्द को सुनकर अपनी मौत भी भूल जाता है।''

जैसे सती चढ़ी सत ऊपर, पिय की राह मन भाई।
पावक देख डरे वह नाहीं, हँसत बैठ सरा माईं।।

अब कबीर साहब उस समय का जिक्र करते हैं। जब किसी औरत का पति मर जाए तो पत्नी सति हो जाती थी। खासकर राजस्थान में लोग उसका मन्दिर बनाकर पूजते थे। असल की नकल होने लगती है। जब लोगों ने देखा इससे अच्छी आमदनी हो जाती है तो जो औरतें सति

नहीं होती थी लोगों ने उन्हें जबरदस्ती आग में डालना शुरू कर दिया। अब इस तरह करने पर सरकार कत्ल का मुकद्दमा दर्ज करती है। इस अपराध को सब सन्तों ने बुरा कहा है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सतियां ऐह न आखिए, मड़ियां लग जलन,
सति सोई आखिए, जो विरह चोट मरन।

मियाँ-बीवी का सम्बंध बहुत ही पवित्र होता है। मियाँ-बीवी प्यार के बंधन में बंधे होते हैं। एक औरत के लिए अपने कायदे-कानून में रहना जितना जरूरी है उतना ही एक मर्द के लिए भी है अगर हम मन को आजादी दे देते हैं तो यह मन विषय-विकारों से संतुष्ट नहीं होता। आप लकड़ी को जितना जलाएंगे आग उतनी ही भड़केगी। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

कामवन्त कामी वह नारी परगृह जो न चूके,
दिन परत परे-परे पछतावे लोभ सोग न सूके।

दो दल सन्मुख आन जुड़े हैं, सूरा लेत लड़ाई।
टूक टूक होइ गिरे धरनि पर, खेत छोड़ि नहिं जाई।।

कबीर साहब समझाते हैं, ''दो दल आमने-सामने होकर लड़ते हैं। सूरमा मैदाने-जंग में मरना या मारना जानता है अगर वह मैदाने-जंग से भागता है तो उसका अपयश होता है उसे कायर कहते हैं।'' गुरु और शिष्य दोनों मैदाने-जंग में निकलते हैं। गुरु शिष्य को शब्द से लैस करता है हमारा मैदान दोनों आँखों के दरम्यान यह मस्तक है।

जब हम अभ्यास करते हैं तो हमारे गिट्टो और घुटनों में दर्द होता है सारा शरीर सुन्न होना शुरू हो जाता है। ऐसा लगता है जैसे सारे शरीर को चींटियाँ काट रही हैं। जब सुरत चक्रों से ऊपर आती है तो कई बार दर्द भी होना शुरू हो जाता है लेकिन प्रेमी सतसंगी को चाहे कितना भी दर्द हो वह उस मैदान तक पहुँचता है जहाँ उसका गुरु बैठा होता है। कबीर साहब कहते हैंः

सूरा सो पहचानिऐ जो लड़े दीन के हेत,
पुर्जा-पुर्जा कट मरे, कबहु ना छाड़े खेत।

छोड़ो तन अपने की आसा, निर्भय ह्वै गुन गाई।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, नहिं तो जन्म नसाई।।

कबीर साहब कहते हैं, ''जिस तरह हम दुनियां के कारोबार के लिए समय निकाल लेते हैं कभी नहीं थकते। भजन-सिमरन के लिए हमारे पास समय नहीं हम हजारों मुश्किले सामने खड़ी कर लेते हैं। कहते हैं कि मन नहीं लगता।'' सन्त कहते हैं कि आप रोजना भजन में बैठें तो मन जरूर लगेगा आपको **शान्ति** मिलेगी। परमात्मा ने हमें इंसान का जामा अपने मिलाप के लिए दिया है लेकिन हम इसे विषय-विकारों में खराब कर देते हैं। परमात्मा ने हमें जो सुनहरी मौका दिया है इसे हाथ से निकाल देते हैं।

हम जानते ही है कि बच्चे पढ़ाई के चोर होते हैं। स्कूल न जाने के लिए कई बहाने करते हैं। टीचर, माता-पिता को बच्चे के नुख्स बताते हैं। माता-पिता और पड़ोसी भी बच्चे को पढ़ाई के फायदे बताते हैं कि पढ़ने से भविष्य अच्छा बनता है इस तरह सब बच्चे की मदद करते हैं टीचर का काम आसान हो जाता है। हम भी उस छोटे बच्चे की तरह भोले हैं जब हम सन्तों के स्कूल में 'नाम' की कमाई करने के लिए जाते हैं हमें समाज वाले रोकते हैं कि तुम इस तरफ क्यों जा रहे हो? पत्नी पति को रोकती है, पति पत्नी को रोकता है। माँ-बाप कहते हैं, ''बेटा! हम बूढ़े हैं हम भजन करेंगे तू किस तरफ लग गया है?''

कबीर साहब ने इस शब्द में बड़े प्यार से समझाया कि अंदर जाने के लिए जरूरी है कि हम गुरु से प्यार करें तभी हमारा दरवाजा खुलेगा अगर हम गुरु से प्यार नहीं करते तो हम कामयाब नहीं हो सकते। मालिक अंदर से दरवाजा नहीं खोलता।

♦ ♦ ♦

प्रेम-विरह

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

पिछले अंक से जारी, अंतिम कड़ी

मिल सखियां पूछो कहो कंत निशानी,
रस प्रेम भरी कुछ बोल न जानी।

बानी द्वारा प्रेम का वर्णन नहीं हो सकता कोई विरला पात्र ही इस **प्रेम** को प्राप्त करता है उसके रोम-रोम से इस प्रेम का ऐसा प्रकाश होता है मानो उसे मालिक के साक्षात दर्शन हो रहे हैं। प्रेम एक सुतेसिध वस्तु है जो अनुभव से ही जाना जा सकता है। जब यह अनुभव में आ जाए तो किसी प्रमाण की जरूरत नहीं रहती। सूरज का चढ़ना ही सूरज की दलील है, यह अमृत चखने की चीज है। यह सोचने या दलीलों से सिद्ध करने की चीज नहीं; यहाँ अक्ल हैरान और बेकार हो जाती है।

सुभर भरे प्रेम रस रंग उपजे चाव साध के संग।

प्रेमी में प्रेम नजर आता है अगर आपने **प्रेम** के दर्शन करने हैं तो किसी प्रेमी को देखें। आप उसमें आलौकिक झलक पाएंगे। प्रेमी प्रेम के रस का उभरकर गिरने वाला प्याला होता है, उसे देखकर हमारे अंदर चाव पैदा होता है।

शम्स तबरेज साहब फरमाते हैं, ''अगर **प्रेम** को नहीं देखा तो तू प्रेमियों में उसकी झलक को देख! इसी जज्बे में मंसूर खुशी-खुशी सूली पर चढ़ा था। **प्रेम** की हस्ती प्रीतम की वजह से ही है। प्रेम की जिंदगी प्रीतम के हुस्न और जमाल की वजह से है। प्रेम पहले माशूक के हृदय के अंदर पैदा होता है। जब तक उसकी कशिश न हो प्रेमी बेचारे की कोशिश ठिकाने नहीं लगती अगर दवाई चाहिए तो दर्द होने की जरूरत है क्योंकि जिसे दर्द नहीं उसे दवाई नहीं मिलती।''

प्रेमी के हाल पर प्रीतम हमेशा नजर रखता है। हमारे अंदर दर्द ही नहीं है तो ताबीब मौजूद है। प्रेम का ताबीब मुर्दों को जिन्दा कर देने

की ताकत रखता है और मेहर का पुंज है। जब हमारे अंदर दर्द ही नहीं तो वह दवा किसकी करे? इस कारण दुनियां की मारोमार को मिटाकर प्रेम की विलायत को तलब करें क्योंकि यह तुम्हें यमराज से छुड़ा देगी। तू हक का शिकारी बन और शिकारों को न ढूंढ क्योंकि यह शिकार मौत के बाज को वापिस कर देगा।

प्रीतम को छोड़कर अगर कोई और ख्याल है तो चाहे वह फूलों का बगीचा हो लेकिन वह हार का कांटा ही है। प्रेम की दौलत और झलक केवल प्रेमियों से ही मिल सकती है; जो आशिकों से दूर भागता फिरता है वह अंत में पछताएगा।

प्रेम के पैदा होने के तरीके

मुर्शिद अपने अनुभव के आधार पर प्रेम पैदा होने के तरीके बयान करते हैं। उन पर चलने को तरीकत कहते हैं। ये तरीके शरीयतों का निचोड़ होते हैं। मंदिरों-मस्जिदों में जाना, ग्रन्थों-पोथियों को पढ़ना, नमाज पूजा, पुण्यदान, जकात देना और तीर्थों की यात्रा करना ये सब बाहरी क्रियाएं हैं। जप-तप संयम आदि का करना नफ्स और कल्ब मन की सफाई के लिए रखे गए हैं, ये सब शरीयत में शामिल है और दाई का काम देते हैं। जिस तरह दाई बच्चे को दूध पिलाकर उसके बढ़ने में मदद करती है उसी तरह शरीयत भी साधकों के रूहानी जीवन को बढ़ने और फूलने में मददगार होती है।

तरीकत दाई का काम देती है। माता जन्म देती है और दूध भी माता से ही उपजता है। दाई तो बच्चे को जन्म दिलाने में नाममात्र ही मदद करती है। बच्चे को जन्म देना कुदरती है इसी तरह कर्म-धर्म आदि करने से प्रेम नहीं उपजता। जप-तप संयम प्रेम पर कुर्बान हैं।

परमार्थ में महात्मा ही बच्चे का रूहानी जन्मदाता होता है जो शिष्य को अपने तर्जुबे और अपनी तवज्जो की हिदायतों पर चलाता है और उससे अंदर के साधनों की कमाई करवाता है। माता की तरह परमार्थ के प्रेमी बच्चे को रूहानी अमृत पिलाकर उसकी परवरिश करता

है, जिससे हकीकत फूलती है और बच्चा विवेक का भागी बनता है। वह रस्में और साधन सुंदर हैं जिनके कारण ईश्क की आग भड़क उठे और उसमें अपना सब हस्ब-नस्ब भूल जाए। गुरु रामदास जी फरमाते हैंः

सो जप सो तप सा व्रत पूजा जित हरि स्यों प्रीत लगाए।

जप-तप व्रत और पूजा वही है जिसके कारण हरि से प्रीत लग जाए। बुल्लेशाह जी ने इस ख्याल को सुंदर तरीके से बयान किया हैः

शरीयत साडी दाई है तरीकत साडी माई है,
अग्गों हक हकीकत पाई है ते मारफत ओह कुछ पाया है।

सब शरीयतों की गर्ज यही कही गई थी लेकिन आमिलों की कमी की वजह से लकीर की फकीरी रह जाती है। यह शरीयतों से छूटने का सामान थे लेकिन बंधन का रूप बन जाते हैं। **प्रेम** हर एक इंसान के अंदर जाति तौर पर मौजूद है। मालिक प्रेम है और रूह उसकी अंश है। इसलिए रूह भी प्रेम है लेकिन रूह के पर्दों में ढके होने की वजह से गुप्त है उसे प्रकट करने की जरूरत है।

हम एक उदाहरण से समझ सकते हैं जिस तरह हर एक चीज में बिजली मौजूद है लेकिन गुप्त हालत में है। जब यह बैटरी के जरिए प्रकट हो जाती है तो रोशनी की शक्ल मे हजारों मील चले जाने के कारण जाहिर होती है। इसी तरह ईश्क इलाही में भी एक बड़ी भारी बिजली की रौ है जिसे इंसानी बिजली कह सकते हैं। यह ऊपर लिखी बिजली से हजारों दर्जे ज्यादा असर वाली और चमकदार है जो प्रकट होने पर नफ्ज के गंदे ख्यालों के कूड़े-करकट को फूँक सकती है और रूह को चमका देती है। परमार्थ के सैंकड़ो सालों के सफर को मिनटो में पार कर देती है। इसके पैदा होने के दो ही तरीके हैं एक तो मालिक या मालिक रूपी सतगुरु की बख्शिश और दूसरी तरीकत की कमाई।

जिस तरह बिजली तिनके-तिनके में व्यापक है उसका जहूर कुदरत की वजह से बादलों में बहुत विस्तार से होता है और दूसरा किसी

बनावटी तरीके से जैसे बैटरी से बिजली प्रकट होती है। इसी तरह **प्रेम** की चिंगारी मालिक की बख्शिश के कारण किसी तालिब के हृदय में जबरदस्त जल उठती है। दूसरा तरीकत पर चलने से नाम का सिमरन करने से प्रकट हो जाती है।

तरीकत में मालिक से प्यार पैदा करने का पहला साधन सिमरन और दूसरा ध्यान है। ज्यों-ज्यों मालिक का सिमरन होता है त्यों-त्यों प्रेमी की श्रद्धा और प्रीत बढ़ती जाती है, जब प्रेमी मालिक को याद करता हुआ मग्न हो जाता है तब मालिक भक्त की तरफ खास तवज्जो देता है। श्रद्धा से किया गया सिमरन दिल के अंदर खास अहसास पैदा करता है; उसके अंदर सरूर और इलाही रंग चढ़ता है। अपने-अपने संस्कारों के कारण यह हालत जल्दी या देर से प्रकट हो जाती है।

तीसरा साधन नाम और 'शब्द-नाम' की कमाई है। मालिक नाम और शब्द है। मालिक **प्रेम** है इसलिए नाम या शब्द प्रेम पदार्थ है ज्यों-ज्यों रूह नाम के साथ लगती है प्रेम अंतर से फूट-फूटकर निकलता है। गुरु नानक साहब फरमाते हैं:

बिन नाम प्रीत प्यार नहीं बसे साच सहेलिया।

नाम के बिना प्रीत-प्यार नहीं जिसके कारण सच में बस जाते हैं। गुरु अर्जुन साहब फरमाते हैं:

प्रेम पदार्थ नाम है भाई माया मोह विनाश।

प्रेम नाम है जिसके कारण माया-मोह का नाश होता है। गुरु अमरदास जी फरमाते हैं:

भक्त सच्चा दर सोएंदे सच्चा शब्द रहाय,
हरि की प्रीत न उपजी हरि प्रेम कसाय।

भक्तजन सच्चे शब्द की कमाई करके मालिक के दर पर सोते हैं। उनके अंदर हरि की प्रीत उपज जाती है जिस कारण वे हरि के प्रेम में जुड़े रहते हैं।

गुरुमुख विचार करके **प्रेम** को पा लेते हैं; शब्द का श्रृंगार करके अपना आप मिट जाता है।

प्रेम पदार्थ पाईए गुरुमुख तत विचार,
सा तन आप गँवाया गुरु का शब्द विचार।

प्रेम की प्राप्ति का मुख्य साधन सन्त-सतगुरु सतसंग और उनकी बख्शिश है। गुरु अर्जुन साहब फरमाते हैंः

जाको भए कृपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात,
नानक प्रीत लगी तिन राम स्यों भेंटत साध संगात।

गोविंद प्रीत लगी अति प्यारी,
जब सतसंग भए साधुजन हृदय मिलया सांत मुरारी।

जिन पर हरि कृपा करता है वही हरि को जपते हैं। साध की संगत या सतसंग से ही मालिक के साथ प्रीत लगती है। सन्तों की शिक्षा से पूरे गुरु की प्रीत उपजती है और चरण कमल से प्रीत लगती है।

लड़ लीन्हे लाए नौं निध पाए नौं सर्वस्व ठाकुर दीन्हा,
नानक सिक्ख सन्त समझाई हरि प्रेम भक्त मन लीन्हा।

बिन गुर प्रीत न उपजे हौमें मैल न जाए,
सोहू आप पछाड़िए शब्द भेद पतियाए।

बिन गुर प्रीत न उपजे भाई मनमुख दूजा भाए,
तुहूँ कूटे मनमुख कर्म करे भाई पल्ला कछु ना पाए।

चरण कमल स्यों लागी प्रीत गुरु पूरे की निर्मल रीत।

गुरु के बिना **प्रेम** प्राप्त नहीं हो सकता। आप विचार करके देखें! हरि प्रेम है और हरि खुद गुरु में है; गुरु ही हरि से मिलवाता है।

बिन गुरु प्रेम न लभ्भी जन वेखो मन निर्जास,
हरि गुरु विच आप रखया हरि मेले गुरु सवास।

बिन सतगुरु भक्ति न होवी नाम न लग्गे प्यार,
जन नानक नाम अराध्या गुरु के हेत प्यार।

सच्चा प्रेम प्यार गुरु पूरे ते पाईए,
कबहू न होवे भंग नानक हरि गुण गाईए।

सतगुरु के बिना भक्ति नहीं हो सकती और न ही नाम के साथ प्यार लग सकता है। हम गुरु के साथ अति प्यार करके नाम को अराध सकते हैं। सच्चा **प्रेम**-प्यार केवल पूरे गुरु से ही प्राप्त किया जा सकता है फिर यह **प्रेम** कभी भंग नहीं होता।

शम्श तबरेज साहब फरमाते हैं कि मुर्शिद ने मुझ जले हुए की नब्ज देखकर कहा, ''अफसोस! जो जप-तप तूने किया है वह सब निष्फल है। रब के आशिकों का इस फनाह दुनियां में आने का मतलब न इल्म

हासिल करना है न अक्ल के खजाने इकट्ठे करना है न उन्हें दुनियां के लाभ-हानि से कोई गर्ज है।'' मुर्शिद ने यह कहकर थोड़ी देर के लिए मेरी आँख से अपनी आँख मिलाई। मुर्शिद ने अपनी नजर से मेरे दिल की हस्ती को मिटा दिया और कहा, ''जा! अब तू जिंदगी की मस्ती भरी शराब के नशे को पी और बाकी की उम्र खुशी से जिंदा रह; बाहर की शरीयत के झगड़े और भेष के झमेलों से दूर रहना।''

जिस तरह मालिक ने बादलों और सब चीजों में पहले से ही बिजली रखी हुई है इसी तरह **प्रेम** हर आत्मा में गुप्त रूप से मौजूद है। मालिक प्रेम है और हम उसकी अंश हैं।

कहो कबीर ओह राम की अंश।

सतगुरु की तरफ से **प्रेम** अपने आप प्रकट होकर प्रेमी रूह को प्रेम में मग्न कर देता है। हकीकत पर चलने से प्रेमी पर प्रेम का रंग चढ़ने लग जाता है। दोनों हालतों में तालिब के दिल में तलब पैदा होना सब रूकावटों को दूर करके मंजिल मकसूद पर पहुँचना सतगुरु की अपार दया के कारण ही होता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

पंथा प्रेम न जाणी भुल्ली फिरे गँवार,
नानक हरि विसराय के पोन्दे नर्क अंधार।

पंथ और भेष इस **प्रेम** को नहीं जानते। दुनियां गँवारों की तरह भूली हुई है। मालिक को बिसारकर नर्कों के भागी बनते हैं। शम्स तबरेज साहब यही फरमाते हैं कि सारे भेष, मोमिन, मुशरक, तरशा महवसी और यहूद सभी अपने दिल की इस दौलत से बेखबर हैं।

प्रेम किस तरह पैदा होता है?

इंसान के दिल में ईश्क कई तरह से पैदा होता है इसके प्रकट होने की पहली सूरत दीदार, दूसरी गुफ्तार और तीसरी ख्याल है। हम किसी की खुशअदाई के जल्वे को अपने दिल में बिठा लेते हैं और रात-दिन उसके ख्याल और ध्यान में मगन रहते हैं यह पहली सूरत है।

जब हम किसी की खूबसूरती का जिक्र सुनकर उसके ध्यान में अपने आपको भूल बैठते हैं यह दूसरी सूरत है। जब हम किसी की पवित्रता या गुण का ख्याल दिल में रखकर उसी को रात-दिन पक्का करने में लगे रहते हैं यह तीसरी सूरत है। इन सबमें जमाली दर्शन दीदार करके **प्रेम** के तीर हमारे अंदर घाव कर जाते हैं और रह-रहकर वह मन मोहनी मूरत दिल दिमाग और आँखों में झलकें देती रहती है।

प्रेम के कायम रहने के लिए जरूरी चीजें

प्रेम के मार्ग में छह चीजों की बहुत जरूरत है। पहला - प्रीतम के साथ बनियापन न हो। आप उससे उसकी भक्ति या प्रेम को छोड़कर और कुछ न माँगें, यह निष्काम प्रेम है। दुनियावी गर्जें संतान या रूपया -पैसा आदि हासिल करने की मुरादें माँगना गर्जी प्रेम है।

दूसरा - प्रेम मालिक या गुरु के लिए ही रखें। गुरु को छोड़कर किसी और के बारे में सोचना **प्रेम** को कई तरफ बाँट देना है जिस कारण मालिक की प्राप्ति नहीं हो सकती और न ही प्रेम बना रह सकता है। दुनियां में गुजारे मात्र के लिए ही बरतें।

नामदेव जी से पूछा गया कि तेरा बढ़ई कब मुँह दिखाता है? आपने फरमायाः

लोक कुटुम्ब सबहूं ते तोरे तू आपन वेडी आवे हो।

जब दुनियां के कुल कुटुम्ब सबकी तरफ से अपनी मौहब्बत को तोड़ लें तो वह आता है।

तीसरा - **प्रेम** लगातार रहे। सदा प्रीतम के चरणों में गिरा रहे। प्रेमी का मन बुद्धि और आत्मा प्रीतम पर अर्पण हो। मन में सदा प्रीतम का चिंतन रहे। बुद्धि के कारण उसी का विचार रहे और अंतर्रात्मा में उसकी कशिश घाव करती रहे। यह न हो कि कभी तो परमात्मा की तरफ लगा रहे कभी दुनियां के विषय-विकारों में लम्पट रहे। ऐसा होने से जितनी रूचि मालिक की तरफ बनती है उतनी ही खत्म हो जाती है।

चौथा - मालिक के साथ **प्रेम** कभी कम नहीं होना चाहिए। ऐसी संगत अख्तियार करें जिससे प्रेम की खुराक मिलती रहे, जिस कारण शौक या रूचि मालिक के साथ बढ़ती रहे।

पाँचवा - प्रेमी सदाचार नेक चलनी रखे जिस तरह किसी बीमारी का ईलाज दवाई है लेकिन आराम आने के लिए परहेज जरूरी है इसी तरह सब आत्मिक रोगो का दारू **प्रेम** है। सच बोलना सदाचार है और

झूठ से परहेज करना है। किसी चीज को ठीक-ठीक बयान करना सच बोलना है। जो दिल में हो उसी का दिमाग में ख्याल करना वही कुछ जुबान से बोलना अर्थात दिल-दिमाग और जुबान का एक होना सच है।

सब बुराईयों का इकट्ठ क्या है?

जो काम छिपकर किया जाता है, जिस काम को करके झूठ बोलना पड़े, किसी का बुरा सोचना या जिस काम को करते हुए यह ख्याल पैदा हो कि कोई देख न ले! अगर कोई देख लेगा तो क्या कहेगा? ऐसा काम करने से मालिक के पास हाजिर-नाजिर होने से इंकार करना है। अपने जमीर को मारना और खलकत से डरते रहना है इस कारण दिल का चैन और एकाग्रता दूर रहती है। किसी काम को करके झूठ बोलने से ऊपर लिखे नुख्स कायम रहते हैं। झूठा, झूठ को सच साबित करने के लिए दलीलें सोचता रहता है। उसका बहुत सारा वक्त प्रापोगंडा करने में बर्बाद हो जाता है। झूठ बोलने के लिए बड़ी यारदाश्त चाहिए नहीं तो हमारा झूठ हमारी अपनी जुबान से ही प्रगट हो जाता है।

हम जिसके बारे में बुरा सोचते हैं उसके साथ हमारा जो आत्मिक रिश्ता है उसे भूल जाते हैं अगर हम यह समझें कि वह हमारे किए हर काम को जानता है और वह हर जगह मौजूद है तो हमारे छिपकर करने वाले कामों का खात्मा हो जाएगा फिर हम झूठ नहीं बोलेंगे इस तरह हमारी आत्मा का जौहर चमक उठेगा। सच बोलने जैसा कोई तप नहीं और झूठ बोलने जैसा कोई पाप नहीं। कबीर साहब फरमाते हैं:

साच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप,
जांके हृदय सांच है तांके हृदय आप।

किसी का बुरा सोचना अपने रूहानी रिश्ते को कुल्हाड़ी से काटना है। किसी का बुरा न चाहना सबके साथ अपने रिश्ते को कायम करने से हमारी मौहब्बत आलमगीर हो जाएगी कोई हमारा दुश्मन नहीं रहेगा। हमारे मन का मन्दिर साफ होगा तो यह मालिक के आने के काबिल होगा। तू अपने मन-मन्दिर के कूड़े-करकट को साफ कर दे।

पवित्र हृदय वाला इंसान हर वक्त प्रसन्नचित रहता है। किसी का दिल न दुखाएं, यह दिल हजारों काबों से अच्छा है। काबा तो हजरत इब्राहिम के बाप का बुतखाना था पर यह दिल रब के फेरा पाने की जगह है अगर तू किसी के दिल को सताता है तो तेरे पूजा-पाठ व्रत नेम किसी काम के नहीं। अंहिसा धारण करें। मन में बुरा चितवन कठोर वचन क्रोध और निन्दा-चुगली आदि करके किसी को दुख न पहुँचाएं। इंसान या हैवान सबके अंदर मालिक को देखना और उनका दिल न दुखाना सदाचार है। सदाचार न होने के कारण हमारा परमात्मा के साथ **प्रेम** नहीं बनता, दर्शन नसीब नहीं होते।

छठा - प्रीतम के साथ हमारा **प्रेम** बाअदब हो। प्रेम में हम अपनी हैसियत को भूल जाते हैं। पिता प्यार से अपने बच्चे को लाड़ लड़ाता है और बच्चा उसकी दाढ़ी को हाथ डालता है। पिता कुछ कहता तो नहीं लेकिन प्यार से उसका हाथ दूर कर देता है। नौकर नौकर है मालिक मालिक है। बच्चा बच्चा है और बाप बाप है। बंदा बंदा है। भक्त भक्त है और भगवान भगवान ही है।

प्रेमी का प्रीतम से **प्रेम** इसी में है कि वह उसके हुक्म के आगे चूं-चरा न करे, हील-हुज्जत न करे उसकी रज़ा के आगे सिर झुकाकर रखे; उसका आदर-सम्मान करे और अदबुदी हद को कभी पार न करे। प्रेमी को बनाने वाला प्रीतम ही होता है। उसकी तरफ से ही दिली कशिश प्रेमी को खींचकर रखती है। प्रीतम की बरकत और तवज्जों के कारण ही प्रेमी की हस्ती है नहीं तो प्रेमी की हैसियत ही क्या है?

प्रेमी प्रीतम को सदा शहन्शाह माने। प्रीतम का हुक्म शहन्शाही, अमर रब्बी है उस पर फूल चढ़ाते रहें। कभी घमंड में आकर अपनी जिस्मानी ताकत के भ्रम में फँसकर बेअदबी के वचन मुँह से न निकालें। अगर कोई परमार्थ में अदबुदी हद को भूल जाता है तो वह प्रीतम की नजरों से गिरकर जलील और ख्वार होता है। दुनियां में हर किसी को बाअदब प्रेम ही अच्छा लगता है।

भगवान भक्त के बस में हो जाता है, यह उसके अदूती **प्रेम** की महिमा है। प्रीतम प्रेमी को सब ताकतों के भंडार की कुंजी बख्शता है; वह उसे इस्तेमाल भी कर सकता है। सहज स्वभाव उससे कोई काम हो जाए! तो हो जाए! लेकिन वह अपने प्रीतम के हुक्म के बाहर कोई बात नहीं करता; उसकी रज़ा हर काम में मुख्य रखता है। उसकी अपनी कोई रज़ा नहीं प्रेमी प्रीतम की रज़ा में ही खुश रहता है। इसी गुण के कारण प्रेमी प्रीतम को प्यारा लगता है। हम गुरु से **प्रेम** की बख्शिश माँगते हैं। बेअदब लोग मालिक की मेहर से खाली रह जाते हैं।

प्रेम कैसे बना रह सकता है?

अगर आप कोई दोस्त बनाना चाहते हैं तो उसके लिए अपने अंदर उसका रस पैदा करें अगर रब से मौहब्बत करना चाहते हैं तो रब के लिए अपने अंदर रस पैदा करें। मौहब्बत बिना परवरिश कर्म के नहीं रह सकती। हम मौहब्बत को मौहब्बत कर्म के साथ ही रख सकते हैं अगर आप किसी काम में कमाल करना चाहते हैं तो बार-बार उस काम की प्रेक्टिस करें तभी कामयाब हो सकते हैं इसलिए प्रेमी बनने के लिए भी हमें बराबर मौहब्बत करने की जरूरत है।

प्रेम को पाने के लिए हमें कुछ न कुछ काम करना पड़ता है अगर हम प्रेम को निभाना चाहते हैं तो हमें प्रेम को इस्तेमाल में लाना चाहिए। जिसके लिए वक्त और कुछ चीज़ों की कुर्बानी करनी पड़ती है। प्रेम को पाने के लिए इंसान जो शौक बरतता है उसी तरह उसे कायम रखने के लिए भी उतना ही शौक चाहिए। गुरु रामदास जी फरमाते हैः

जिनको प्रेम प्यार तो आपे लाया कर्म कर।

प्रेम पहले कहाँ पैदा होता है? प्रेम पहले माशूक के दिल में पैदा होता है अगर शमा न जलती तो परवाना कदाचित न जलता। मालिक की दया से प्रेम की उत्पति होती है।

गुरु पीरां की चाकरी महा करड़ी सुख सार,
नदर करे जिस आपणी तिस लाए हेत प्यार।

जिन्हें सन्तों और साध-संगत के प्यार की दौलत नसीब है समझें कि मालिक ने उन पर मेहर की है। यह दौलत गुरु-पीरों से मिलती है। गुरु-पीरों की चाकरी बहुत कठोर है, यह सब सुखों का सार है।

सन्तजना स्यों प्रीत बन आई जन को लिखत लिखया धुर पाई,
साध संगत स्यों प्रीत बन आई पूर्व कर्म लिखत धुर पाई।

सन्तों और साध संगत के साथ प्रीत का बनना भी धुर लेखों की वजह से होता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मिल प्रीतम सुख पाया सगल गुणां हार,
नानक गुरुमुख पाईए हरि स्यों प्रीत प्यार।

अंतर प्रेम प्राप्त दर्शन गुरुबानी सो प्रीत स्यों प्रसन्न,
ऐनस निर्मल जोत सवाई घट दीपक गुरमुख जाता।

साकत प्रेम न पाईए हरि पाईए सतगुर भाए,
सुख दुख दाता गुरु मिले कहो नानक सिफत समाए।

प्रेम की दौलत गुरुमुख को मिलती है साकत को नहीं। हरि के साथ प्यार होना किसी गुरुमुख का ही हिस्सा है। वह प्रीतम के साथ मिलकर सारे गुणों का हार गले में डाल लेता है। अंतर में प्रीत का होना, मालिक के दर्शन की प्राप्ति, गुरबानी से प्रीत, घट के अंदर निर्मल जोत या दीपक का प्रकाश यह गुरुमुखों की ही जायदाद है। यह गति साकत या मनमुख को नसीब नहीं होती। **प्रेम** के आने से और गुण अपने आप आ जाते हैं।

हौमें का नाश

मौहब्बत का दूसरा नाम लगातार याद है। प्रीतम को लगातार याद करके प्रेमी पर प्रीतम का रंग चढ़ता है, मग्नताई पैदा होती है जिससे प्रेमी अपने आपको भूलकर प्रीतम के अंदर समाता जाता है यहाँ तक की प्रेमी प्रीतम का रूप बन जाता है। बुल्लेशाह कहते हैं:

रांझा रांझा करदी नी मैं आपे रांझा होई।

अपने आपको भूलना **प्रेम** का कुदरती ख्वाशा है। प्रेमी की सब ख्वाहिशें प्रीतम की रज़ा से एक हो जाती है। उसका आपा प्रीतम में समा जाता है जब अपना कोई आपा ही नहीं रहा तो ख्वाहिशें कहाँ? मालिक भी ऐसे सच्चे प्रेमियों की तलाश में है। हमारी खुदी हमारे और मालिक के बीच रूकावट है। जब तक तूं है तेरा प्रीतम तेरा कैसे बन सकता है? जब तू ही नहीं रहेगा तेरा प्रीतम तेरा अपना बन जाएगा।

कलंदर साहब फरमाते हैं, ''जब तू याद कर करके अपने आपको खाली कर लेगा तो तुझे मालिक के दरबार जाने का रास्ता मिल जाएगा।'' मौलवी रूम साहब फरमाते हैं कि जब तुझमें तू नहीं रहेगी तो तेरा खुदा के साथ विसाल हो जाएगा इसलिए तू अपने आपको भूल जाने की कोशिश कर। प्रेमी हौमें को मिटा देता है और मोह के बंधनों को ढीला कर देता है। हमारे और मालिक के बीच का पर्दा फट जाता है और मालिक के साथ मिलाप होता है। यह प्रेम हमारी खुदगर्जी की ख्वाहिशों को जलाकर रूह को रूहानी मंडलों में उड़ाने के योग्य बनाता है।

यह सच है कि जो जिस्म या जिस्मानियत पर काबू पा लेता है वह ऊपर के रूहानी मंडलो पर हुकूमत करता है। **प्रेम** हमारे दुखों का निसंदेह पक्का इलाज है। वह इंसान खुशकिस्मत है जो अपने आपको कुर्बान करके अपनी हौमें को गँवा लेता है। हौमें को मारे बिना कोई मालिक का दीदार नहीं कर सकता, जो इसे खरीदना चाहता है उसे पहले अपने आपको बेचना पड़ता है।

कोई आन मिलावे मेरा प्रीतम प्यारा हों तिसपे आप बेचाई।

प्रेम में देना है लेना नहीं। प्रेम एक ऐसी आलौकिक वस्तु है जिसे मिल जाती है उसे फिर किसी और चीज की ख्वाहिश नहीं रहती। प्रेम इंसान को बेगरज और बेपरवाह कर देता है। प्रेम में कभी लेने का सवाल नहीं होता प्रेम हमेशा देना ही जानता है। हम बच्चों के साथ प्रेम करते हैं उन्हें देते ही रहते हैं, उनसे कुछ नहीं लेते। जहाँ प्रेम होगा वहाँ देने का ही ख्याल रहेगा कभी लेने का चित्त चेता नहीं रहेगा।

प्रेम बेगरज है। मालिक के प्रेम में भी देने का जज्बा काम करता है। शुरू-शुरू में हम मालिक के आगे प्रार्थना करते हैं और मालिक से अपनी जरूरत की चीजें माँगते हैं लेकिन यह पूरे प्रेम के प्रकट होने से पहले की बातें हैं।

आम लोग रब की पूजा कोई न कोई कामना रखकर करते हैं। उससे दुनियां की चीजें माँगते हैं बाल-बच्चों की अच्छी सेहत या स्वर्गों के सुख माँगते हैं। कोई विरला इंसान रब की पूजा रब से मौहब्बत करके करता है। रब को रब की मौहब्बत के लिए याद करना हमारा आर्दश है। हमें अपने दिल को दुनियां की ख्वाहिशों के लिए काला नहीं करना चाहिए। रब से रब के बिना और कुछ नहीं माँगना चाहिए।

बिन तुध होर जे मंगणा सिर दुखां दे दुख,
देह नाम संतोखिए उतरे मन की भुख।

जब **प्रेम** अपना मुँह दिखाता है हमारी खुदी मालिक की रज़ा में लीन हो जाती है फिर हम मालिक से माँगना बंद कर देते हैं। प्रेमी प्रीतम की रज़ा तस्लीम करने में खुश रहता है फिर प्रेमी मालिक से कुछ माँगना हराम समझता है।

मौलवी रूम साहब फरमाते हैं कि जब हम किसी के साथ **प्रेम** करते हैं तो हम उस पर अपना दिल जान ईमान सब कुछ कुर्बान कर देते हैं। उसे जो पसंद है हम वही करते हैं। क्या रब ऐसा गया गुजरा है जिसकी मौहब्बत का दम भरते हुए उससे मुरादें माँगते हैं? क्या इस तरह करते हुए हम प्रेमी कहलवाने का हक रख सकते हैं? फिर तो हम रब के नहीं रब की चीजों के ग्राहक हैं; हमें रब कैसे मिलेगा? रब को वही पाएगा जो उसके नाम पर कुर्बान है; जो सोते-जागते, उठते-बैठते, चलते-फिरते हर समय रब को याद करता है।

समाप्त.....

♦ ♦ ♦

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

मौत

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

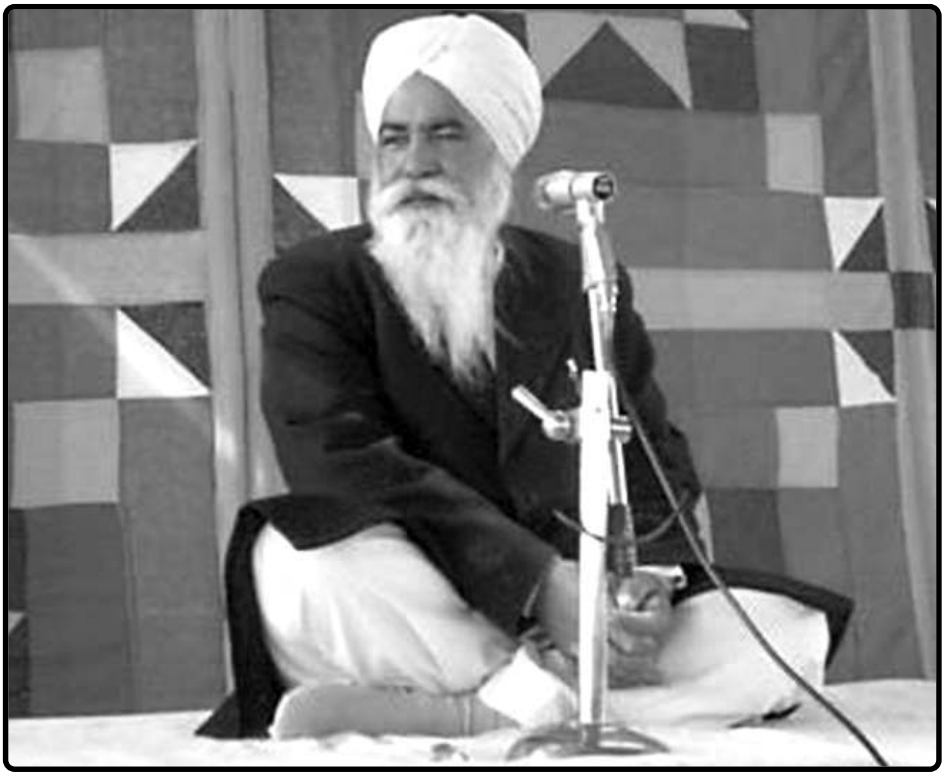

सभी सन्त-महात्माओं ने हमें यह संदेश दिया कि हम जिस देश में रह रहे हैं यह देश हमारा नहीं यहाँ तक कि हम जिस शरीर में रह रहे हैं यह भी एक किराये का मकान है जिसे हमने एक दिन खाली करना है। **मौत** का समय दर्दनाक होता है। हर किसी की मौत पहले से तय होती है कि उसकी मौत कब और कहाँ होगी?

मौत के समय कोई हमारी मदद नहीं कर सकता। जिन लोगों से हमें लगाव होता है हम उन लोगों को देखकर बहुत रोते और तड़पते

हैं, वे भी हमें देखकर रोते और तड़पते हैं। हमने इस दुनियां में जो धन-दौलत कमाया होता है वह भी हमारे साथ नहीं जाता।

प्यारेयो! सतसंगी शरीर छोड़ने के समय सुख-शान्ति और खुशी महसूस करता है क्योंकि उसके अंदर गुरु स्वरूप प्रकट हो जाता है वह 'नाम' के साथ जुड़ा होता है। 'नाम' सारे बंधन तोड़ देता है। वह किसी रिश्तेदार की परवाह नहीं करता अगर उस समय कोई गैरसतसंगी उसके नज़दीक नहीं होता तो वह जरूर बताकर जाता है कि वह खुशी से अपने गुरु के साथ जा रहा है।

सन्त-महात्मा हमें जन्म और **मौत** के बारे में बताते हैं कि बच्चा माता के पेट में उल्टा लटका होता है। वह वहाँ बहुत मुश्किल हालत में होता है और जन्म के बाद भी वह अपने ऊपर से एक मक्खी तक नहीं उड़ा सकता। बहुत समय तक वह दूसरों पर निर्भर रहता है जो उसका ख्याल रखते हैं। **मौत** के समय भी ऐसा ही होता है उस समय वह खुद कुछ नहीं कर सकता दूसरों पर निर्भर होता है।

हम दुनियावी सुखों में इतने खो जाते हैं क्योंकि हम **मौत** को भूल जाते हैं अगर हम मौत को याद रखें कि हमने एक दिन यह संसार छोड़ जाना है तो हम दुनियावी मौज-मस्ती में शामिल नहीं होंगे। हम भजन-सिमरन करके ही अपनी **मौत** का सामना करने के लिए तैयार रह सकते हैं। मौत किसी आत्मा को नहीं बख्शती। **मौत** राजा-रंक, औरत-मर्द, बूढ़ा-जवान किसी को नहीं बख्शती जब जिसका समय आता है मृत्यु का देवता आता है और उसे ले जाता है।

इस बारे में महाराज सावन सिंह जी एक कहानी सुनाया करते थे कि एक बहुत अच्छा राजा था। एक बार वह जंगल में एक महात्मा से मिलने गया। महात्मा बहुत कमाई वाले थे, उस इलाके के लोग महात्मा की बहुत इज्ज़त करते थे। महात्मा ने राजा का स्वागत किया। कुछ समय बाद वहाँ एक शेरनी आई। महात्मा ने शेरनी का थोड़ा सा दूध राजा को पीने के लिए दिया और बाकी का दूध खुद पी लिया।

जब राजा अपने महल में वापिस आया। शेरनी का थोड़ा सा दूध पीने से उसमें बहुत ताकत आ गई, उसने रानियों के साथ विषय भोगे। राजा ने सोचा! थोड़ा सा दूध पीने से मुझमें इतनी ताकत आ गई है उस महात्मा ने बहुत ज्यादा दूध पिया है उसमें तो बहुत ताकत आई होगी यह भी हो सकता है वह महात्मा बहुत सी औरतें रखता हो! मुझे यह पता लगाना होगा क्योंकि वह बहुत अच्छे महात्मा है वह इस दूध की ताकत का क्या इस्तेमाल करते हैं?

अगले दिन सुबह राजा महात्मा के पास गया और महात्मा से कहा, ''महात्मा जी! आपने कल मुझे पीने के लिए शेरनी का दूध दिया था। एक बार वह दूध पीने से मेरे अंदर बहुत ताकत आ गई। मैंने महल में जाकर रानियों के साथ विषयों का भोग किया। आप तो रोज़ाना ही शेरनी का दूध पीते हैं आपमें तो बहुत ताकत होगी आप उस ताकत का क्या करते हैं?''

महात्मा ने सोचा! राजा के दिल में ऐसा ख्याल आना अच्छी बात नहीं। महात्मा ने कहा, ''मैं कुछ दिनों के बाद तुम्हारे सवाल का जवाब दूँगा। तुम्हें जो कुछ खाना-पीना हो खा सकते हो। तुम रोजाना यहाँ आ सकते हो मैं तुम्हें रोज शेरनी का दूध पीने के लिए दूँगा लेकिन तुम्हें एक बात बता देता हूँ कि आज से सात दिन के बाद तुम मरने वाले हो।'' उसके बाद महात्मा ने राजा को शेरनी के दूध का भरा हुआ ग्लास पीने के लिए दिया।

राजा अपने महल में लौट आया लेकिन वह बहुत उदास था क्योंकि महात्मा ने उसे बताया था कि वह सात दिन के बाद मरने वाला है। रानियों ने राजा से पूछा कि आज आप इतने उदास क्यों है? राजा ने उत्तर दिया, ''मैंने सुना है कि वह महात्मा बहुत कमाई वाले हैं वह जो भी कहते हैं सच होता है। महात्मा ने मुझसे कहा है कि मैं सात दिन के अंदर मर जाऊँगा। आप जो कुछ मुझसे लिखवाना चाहते हैं लिखवा सकते हैं।'' उस दिन राजा ने रानियों में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई।

उसके बाद राजा रोजाना महात्मा के पास जाता और महात्मा उसे बहुत सारा शेरनी का दूध पीने के लिए देते लेकिन राजा में कोई ताकत नहीं आई क्योंकि वह हर समय अपनी **मौत** के बारे में ही सोचता रहता था। जब सात दिन के बाद वह मरा नहीं तो उसने महात्मा से पूछा, ''महात्मा जी! आपने कहा था कि मैं सात दिन बाद मर जाऊँगा लेकिन मैं मरा नहीं।'' महात्मा ने कहा, ''तुम एक बहुत अच्छे राजा हो प्रजा का बहुत ख्याल रखते हो और मेरे दिल के अंदर तुम्हारे लिए बहुत प्यार है। मैं तुम्हें यह समझाना चाहता था कि जो इंसान अपनी **मौत** को याद रखता है उसके अंदर दुनियां की कोई चाहत नहीं होती और वह दुनियां के विषयों में नहीं बहता।''

महात्मा सदा **मौत** को याद रखते हैं वह दुनियां की खुशियों के बारे में नहीं सोचते उनके अंदर दुनियां की कोई चाहत नहीं होती। महात्मा हमें चेतावनी देते हैं कि दर्दनाक **मौत** का समय जरूर आएगा। इंसान मौत के बारे में सोचकर ही काँपने लगता है। मौत का देवता जरूर आएगा और आपका कान पकड़कर ले जाएगा। आप लोग **मौत** को भूलकर दुनियावी मौज-मस्ती में खो गए हैं जबकि हम अपने दोस्तों, रिश्तेदारों को मरता हुआ देखते हैं और सोचते हैं कि मौत दूसरों के लिए है हमारे लिए नहीं।

एक बार गुरु नानक साहब अपने शिष्य बाला और मरदाना के साथ कहीं जा रहे थे। दूसरी तरफ से कुछ लोग किसी मरे हुए व्यक्ति की लाश को श्मशान घाट ले जा रहे थे। यह देखकर गुरु नानकदेव जी ने यह शब्द उचाराः

जागो जागो सुत्तयो चलया बणजारा।

एक हिरन खेत में उछल कूदकर फसल को खा रहा था और खराब कर रहा था। उसे देखकर गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''तुम उछल-कूद कर अच्छी फसल खराब कर रहे हो और यह भूल गए हो कि शिकारी बंदूक लेकर तुम्हें ढूंढ रहा है। जब शिकारी तुम्हें गोली मार देगा तो तुम यह सब उछल-कूद भूल जाओगे।''

प्यारेयो! एक दिन आपको भी इस ट्रेन पर चढ़ना होगा। इस ट्रेन के टिकट चेकर देखते हैं कि सभी यात्रियों के पास टिकट है या नहीं? उनके दिल में दया भावना नहीं होती। जिसके पास टिकट नहीं होता उनसे वे बहुत गलत तरीके से पेश आते हैं। हम उस टिकट की बात कर रहे हैं जिसका मतलब 'नाम' है। हमें पूर्ण गुरु के पास जाकर 'नाम' का टिकट लेना चाहिए ताकि जब हम उस ट्रेन में जाएं तो हमें टिकट चेकर से कोई परेशानी न हो।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि हिन्दु धर्म के अनुसार जब किसी आदमी की **मौत** हो जाती है तो उसे लकड़ी के बिस्तर पर लिटाया जाता है। चार लोग उसे कंधे पर उठाकर श्मशान घाट ले जाते हैं। तुम्हारे भाई, रिश्तेदार, दोस्त श्मशान घाट तक तुम्हारे पीछे चलते हैं। उसकी पत्नी अपने बाल खोल देती है जिसका मतलब यह है कि अब कोई उसका ख्याल रखने वाला नहीं है। मरे हुए के शरीर को दफन कर दिया जाता है या जला दिया जाता है वह समय बहुत ही दर्दनाक होता है, सभी रिश्तेदार, दोस्त बहुत रोते हैं।

महात्मा कहते हैं कि आप गुरु के वचनों को नहीं सुनते। आप लोग कहते हैं कि आपको भजन-सिमरन के लिए समय नहीं मिलता। जब आप सिमरन के लिए बैठते हैं तो आपके शरीर में दर्द होता है। आप इस संसार में आकर फायदा नहीं उठा रहे। बचपन के बाद जवानी निकल गई बुढ़ापा आ जाता है यह शरीर हमारे बस में नहीं रहता फिर भी हम लम्बा जीवन जीने की इच्छा रखते हैं।

हमें चाहिए कि हम दुनियां की चीज़ो से अपना मोह त्यागें और अपना ध्यान 'नाम' की तरफ लगाएं। यह जगह हमेशा रहने के लिए नहीं है। वह दिन जरूर आएगा जिस दिन हमें इस जगह को छोड़ना होगा। आज तक कोई इस दुनियां से कुछ नहीं ले जा सका; न यह दुनियां किसी के साथ आती है न किसी के साथ जाती है।

♦ ♦ ♦

धन्य अजायब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी मुम्बई में 5 से 9 जनवरी 2011 तक नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी भाई-बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि सतसंग में पहुँचकर लाभ उठाएं।

भूरा भाई आरोग्य भवन,
शान्तिलाल मोदी मार्ग (नज़दीक मयूर सिनेमा)
कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई - 400 067
फोन - 09 833 00 4000